Lecture Method Of Teaching Mathematics

व्याख्यान विधि

pedagogy of mathematics

B.Ed. Sem II, Paper VIIA

By Dr. Sweta Bagade

Asst. Prof. (B.Ed)

GSCW Jamshedpur

व्याख्यान विधि (Lecture Method) - व्याख्यान विधि एक पारंपरिक शिक्षण विधि है जिसमें मुख्यतः भाषा (लिखित या मौखिक) के द्वारा आवश्यक सूचनायें प्रदान की जाती है इसलिय इसे चाक और वार्ता (Chalk and talk) विधि भी कहा जाता हैं। इस विधि में अभ्व्यक्ति, शिक्षण एवं अधिगम मुख्यतः शिक्षक द्वारा बोले या लिखे गए शब्दों पर निर्भर होती है। इसमें शिक्षक एक सक्रिय भूमिका में होता है और विद्यार्थी अपेक्षा कृत निष्क्रिय श्रोता होते हैं । यह एक शिक्षक केन्द्रित शिक्षण विधि है जिसमें विचारों का प्रवाह एक तरफा होता है। शिक्षक प्रायः अपने विषयवस्तु पर वार्ता तैयार करके लाता है और छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है जिसे छात्र सुनकर समझने का प्रयत्न करते हैं।उदाहरण के लिए समुच्चय को परिभाषित करते हुए एक शिक्षक व्याख्या कर सकता है: "वस्तुओं के एक सुपरिभाषित समूह को समुच्चय कहते हैं अर्थात कोई भी समूह समुच्चय नहीं हो सकता बल्कि सिर्फ वह समूह समुच्चय कहा जायेगा जिसमें उसके अवयव एक दुसरे से किसी निश्चित नियम से बंधें हों जैसे सम संख्याओं का समूह, विषम संख्याओं का समूह, विद्यालय में पांचवीं कक्षा में पढनेवाले विद्यार्थियों का समूह आदि समुच्चय के उदहारण हैं"।

व्याख्यान विधि गणित अथवा विज्ञान विषयों के शिक्षण में ज्यादा प्रभावी नहीं है परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में गणित शिक्षण में इसका उपयोग सावधानी पूर्वक, अन्य प्रभावी विधियों के साथ समन्वय रखते हुए किया जा सकता है। व्याख्यान विधि गणित शिक्षण के दौरान निम्नांकित परिस्थितियों में उपयोग किया जा सकता है

- नये विषय वस्तु की प्रस्तावना में,
- अमूर्त (Abstract) अवधारणाओं की व्याख्या में,
- वाद विवाद का आरम्भ करने में,
- अवधारणाओं के संक्षेपीकरण एवं पुनरावलोकन (review) में एवं
- व्याख्या करने, प्रमें य सिद्ध करने तथा लम्बी, जटिल समस्या को हल करने में।

व्याख्यान विधि के गुण Merits of lecture method

- जब कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अत्यधिक हो तब व्याख्यान विधि का सीमित प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि कक्षा के सभी छात्र शिक्षक की वार्ता सुनते है और सभी को सुनने और सीखने का समान अवसर मिलता है।
- यह विधि आर्थिक और समय की दृष्टि से काफी किफायती (Cost Effective) भी है।
- शिक्षक के लिए सुविधाजनक हैं क्योकि इसमें विद्यार्थियों को को व्यक्तिगत सहायता नहीं देनी पडती तथा साथ ही शिक्षक अपनी गति से शिक्षण कर के वृहत पाठ्यक्रम को भी जल्दी पूरा कर सकता है।

- यह सूचनाओं के आदान-प्रदान की पुरानी एवं पारंपरिक विधि है।
- इसमें शिक्षक योजनाबद्ध तरीके से विचारों को उनके स्वाभाविक क्रम में रख सकता है।
- व्याख्यान विधि गणित के प्रति विद्यार्थियों की रुची जागृत करने एवं गणित अध्ययन के लिए उन्हें प्रेरित करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है। शिक्षक अपनी वार्ता से गणित की जीवन में उपयोगिता बताकर/अच्छे उदाहरण देकर काफी रोचक और प्रेरणादायक बना सकता है। इस विधि से अधिक विषय वस्तु को कम समय में पढाया जा सकता है।

व्याख्यान विधि की कमियां Demerits of lecture method

- गणित का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में तार्किक चिन्तन का विकास करना है जो छात्रों को बिना स्वयं चिन्तन किये, विषय वस्तु को सिर्फ शिक्षक से सुन कर नहीं प्राप्त किया जा सकता है।
- यह एक शिक्षक केन्द्रित विधि है विद्यार्थी केन्द्रित विधि नहीं जबकि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा है जिसमें शिक्षण, छात्रों की आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं सीमाओं के अनुसार उनकी स्वयं की सक्रिय भागीदारी के साथ होना चाहिए।
- **व्याख्यान विधि** विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने, स्वयं प्रयोग करने तथा सक्रिय रूप से शिक्षण में भागीदार होनें का अवसर नहीं प्रदान करता।

- इस विधि में छात्र निष्क्रिय रहते हैं, इसलिए व्याख्यान से उसका ध्यान हट सकता है, और कक्षा नीरस हो सकती है यह विधि मनोवैज्ञानिक नहीं है।
- गणित शिक्षण की यह व्याख्यान विधि अधिगम सिद्धान्तो के अनुकूल नहीं है।
- यह विधि दिव्यांग जनों (Specially Abled Children) के लिए उपयुक्त नहीं है।
- यह विधि एक तरफा (Unipolar) है जिसमें अध्यापक सक्रिय और विद्यार्थी निष्क्रिय भूमिका में होते हैं ।

****